



द्वितीय 'मैनइन्गेज' वैश्विक संगोष्ठी 2014
लैंगिक न्याय के लिए पुरुष व लड़के
10-13 नवम्बर, इंडिया हैबिटेट सेंटर, नई दिल्ली

लैंगिक न्याय के लिए पुरुष व लड़के: छल्ले घज़ैशज़णज़ज़ात्र व कज़र्यवज़ळ के ए टज़हवज़न

हम गहन असमानताओं और असंतुलित सत्ता संबंधों वाली दुनिया में रहते हैं जहां लोगों के व्यवहार से जुड़े मानक व मूल्य नाइंसाफियों को भड़काते हैं और उन्हें बढ़ावा देते हैं। हमें इसे बदलना होगा। इसी मकसद को लेकर, 94 देशों के 1200 से भी अधिक कार्यकर्ता/व्यावसायिकों ने, जो विभिन्न संस्थागत पृष्ठभूमि से जुड़े थे, एकजुट होकर द्वितीय 'मैनइन्गेज' वैश्विक संगोष्ठी का नई दिल्ली, भारत में, नवम्बर 10-13, 2014 के दौरान आयोजन किया।

लैंगिक समानता मानवाधिकार का एक महत्वपूर्ण घटक है, जैसा कि अंतर्राष्ट्रीय मानकों में व्यक्त किया गया है, जिसमें प्रमुख रूप से मानवाधिकारों का सार्वभौमिक घोषणापत्र; महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव हटाने हेतु संविदा-सीडॉ; नागरिक और राजनैतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिज्ञापत्र तथा बाल अधिकारों पर घोषणापत्र, शामिल हैं। हम जनसंख्या व विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2014 के कार्यवाही कार्यक्रम, बीजिंग घोषणापत्र व प्लेटफार्म फॉर व्शन (1995), महिलाओं के दर्जे पर संयुक्त राष्ट्र आयोग का अड़तालीसवां सत्र (2004) तथा अन्य सभी आवश्यक समझौतों को लागू करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं। हम मैनइन्गेज रिवो व जोहनसबर्ग काल फॉर एक्शन 2009 के भी कार्यन्वयन के प्रति अपनी वचनबद्धता की पुष्टि करते हैं। हम भविष्य में होने वाले समझौतों, जिसमें 2015 से आगे का विकास कार्यक्रम भी शामिल है की प्रतीक्षा करते हैं और सबके लिए लैंगिक समानता व लैंगिक न्याय सुनिश्चित करने के प्रमुख प्रयासों में पुरुषों व लड़कों की भागीदारी का निरन्तर समर्थन करते हैं।

इस संगोष्ठी में लैंगिक न्याय के मुद्दों की सम्पूर्ण विविधता और जटिलताओं को उजागर किया गया है। इसने हमें चिन्तन करने, रणनीतिगत सोचने, समाज निर्मित सीमाओं के पार जाने और मज़बूत सहभागिता बनाने की चुनौती प्रदान की है। हालांकि कमियां मौजूद हैं पर इस ऐतिहासिक कार्यक्रम के परिणामस्वरूप तथा अपनी साझी प्रतिबद्धता और कार्यवाही का आह्वान करते हुए हम निम्न सरोकार और प्रतिज्ञापन प्रस्तुत करते हैं।



- 1 पितृसत्ता और लैंगिक अन्याय समस्त विषय के समाजों को परिभाषित करने वाली विशिष्टताएं हैं जो सभी लोगों के जीवन पर विनाशकारी प्रभाव डालती हैं। हम कौन हैं और दुनिया के किस हिस्से में हैं इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, यह हमारे रिश्तों को कम स्वस्थ, कम सुरक्षित और कम परिपूर्ण बनाती हैं। कम उम्र से ही ये हमारे परिवारों और समुदायों में दुख, हिंसा, रोग, नफरत और मौत फैलाती हैं। ये हमारे मूल मानवाधिकारों का हनन करती हैं और हमें प्यार, गरिमा, आत्मीयता और आपसी सम्मान का जीवन बसर करने से रोकती हैं। यह हमारी अर्थव्यवस्था के विकास में अवरोध पैदा करती हैं और हमारे सार्वभौमिक समाज को फलने-फूलने से रोकती हैं। यह दुनिया भर में सतत विकास की राह में आने वाली प्रमुख बुनियादी रुकावटें हैं।
हमें मानवीय खुशहाली के सामने खड़े इस घोर खतरे से तुरन्त उबरने की ज़रूरत है।
- 2 पितृसत्ता हर एक व्यक्ति को प्रभावित करती है, परन्तु अलग-अलग तरीकों से। महिलाएं व लड़कियां निरन्तर महत्वपूर्ण और असंतुलित स्तर पर लैंगिक अन्याय और मानवाधिकार हनन का सामना करती हैं। पुरुशों और लड़कों को भी पितृसत्ता से फायदा और नुकसान दोनों ही पहुंचता है, पर उन्हें शायद ही इस सच का पता चलता हो। पुरुष व लड़के भी 'लैंगिक' मानव हैं। लैंगिक समानता महिलाओं, पुरुषों व अन्य लिंगों के व्यक्तियों को फायदे पहुंचाती है।
हमें यह तुरन्त स्वीकारने की ज़रूरत है कि लैंगिक असमानताएं बर्दाश्त नहीं की जाएंगी फिर चाहे इनसे कोई भी प्रभावित हो रहा हो।
- 3 हम एक मूल्यवान विरासत पर निर्माण कर रहे हैं। हम लैंगिक असमानताओं पर अपनी

चेतना, समानता प्रोत्साहित करने के अपने प्रयासों और संगोष्ठी की मौजूदगी का पूरा श्रेय नारीवादी और महिला आंदोलनों के अदम्य साहस और अवलोकन को देते हैं। हम महिला अधिकार संगठनों के काम के साथ खुद को जोड़ते हैं और पितृसत्ता को कायम रखने वाले सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, कानूनी, वित्तीय और राजनैतिक संरचनाओं में बदलाव लाने के उनके योगदान को स्वीकार करते हैं।

इस ऐतिहासिक संदर्भ के मद्देनजर हम पुरुशों व लड़कों के साथ अपने लैंगिक समानता के काम को नारीवादी व मानवाधिकार उसूलों, संगठनों और आंदोलनों से जानकारी हासिल करते हुए, एकजुटता की भावना के साथ जारी रखेंगे।

- 4 हम लैंगिक न्याय हासिल करने के लिए एक समावेशी पद्धति में विश्वास रखते हैं। हम पुरुष महिलाएं और ट्रांसजेंडर व्य लैंगिक न्याय आंदोलन में भागीदारी करने के लिए सभी लोगों का आह्वान कर रहे हैं। हालांकि पुरुषों व लड़कों को इन प्रयासों में शामिल करना महत्वपूर्ण है परन्तु इस बात को अक्सर नज़रअंदाज़ किया गया है।
हम चाहते हैं कि ऐसे तरीकों को सामने लाएं जिनसे पुरुष व लड़के महज़ साधन बनकर न रहें बल्कि लैंगिक समानता के प्रयासों में प्रभावशाली योगदान कर सकें।
- 5 संरचनात्मक नाइंसाफियों और शोषण के पीछे प्रेरक बल पितृसत्तात्मक सत्ता है जिसकी अभिव्यक्ति प्रबल मर्दानगी के माध्यम से होती है। हम विशेष रूप से सैन्यीकरण और नव-उदार भौगोलीकरण की असंख्य अभिव्यक्तियों को लेकर चिंतित हैं जैसे युद्ध, हथियारों में इजाज़ा; वैश्विक और स्थानीय आर्थिक असमानता; राजनैतिक व धार्मिक



कट्टरता का हिंसक प्रदर्शन; राज्य हिंसा; नागरिक समाज के खिलाफ हिंसा; मानव खरीद-फरोख्त व्यापार तथा प्राकृतिक संसाधनों का विनाश।

हमें पितृसत्ता तथा लोगों व पर्यावरण के पोषण के बीच संबंध को फौरन उजागर करना होगा तथा लड़कों व पुरुषों को खुद में बदलाव लाने के लिए सहयोग देना होगा जिससे वे "उनके ऊपर सत्ता" को छोड़कर 'उनके साथ सत्ता' के व्यवहार को अमल में ला सकें।

- 6 लैंगिक असमानताएं नस्ल, उम्र, वर्ग, जाति, जातीयता, राष्ट्रीयता, यौन झुकाव, लैंगिक पहचान, धर्म, काबलियत व अन्य कारकों पर आधारित असमानताओं से संबंधित होती हैं। हम अपनी दुनिया की विविधता का मोल समझते हैं और इन विभाजित करने वाली नाइंसाफियों को इन कारकों से अलग करके नहीं देख सकते। हम सामाजिक न्याय के आंदोलनों के साथ अर्थपूर्ण भागीदारी, गहन साझेदारी तथा साझी कार्यवाहियों के ज़रिए सामाजिक व आर्थिक समावेश को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- 7 यह ज़रूरी है कि हम सब लैंगिक न्याय के मूल्यों को अपने जीवन में उतार लें। इसके लिए ज़रूरी है कि पुरुष व लड़के खासतौर पर अपनी सत्ता और सुविधाओं पर एक विवेचनात्मक चिंतन करें और निजी तौर पर लैंगिक न्याय पालन करने वाले पुरुष का नज़रिया विकसित करें। इसके लिए हम सबको गहन व्यक्तिगत और राजनैतिक इरादों पर अपना काम आधारित करना होगा। जब और जहां भी हममें से कोई एक व्यक्ति भी कोई एक बात कहता है और व्यवहार उससे ठीक विपरीत करता है वहीं बुनियादी रूप

से हमारे मकसद की तौहीन होती है। हमें निजी और सार्वजनिक दोनों जगहों पर दूसरों के अन्यायपूर्ण व्यवहार के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिए; किसी नाइंसाफी के सामने खामोश रहने के मायने हैं कि हम भी उस अन्यायी कार्यवाही का समर्थन कर रहे हैं। हमारे विचारों, व्यवहारों, संबंधों और संगठनात्मक संरचनाओं में उस दुनिया का अक्स झलकना चाहिए जिसे हम विष्व स्तर पर देखना चाहते हैं। ऐसा करने के लिए हमें खुद को तथा अपने दोस्तों, रिश्तेदारों, सहकर्मियों और साथियों को जवाबदेह बनाना होगा।

- 8 लैंगिक न्याय के काम में पुरुषों व लड़कों की शिरकत बढ़ाने के प्रयासों से यह काम ज़्यादा व्यापक बनता है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम अन्य प्रभावशाली कार्यनीतियों में, विशेषकर जो महिला अधिकार संगठनों द्वारा अपनाई जा रही हैं निवेश करने से परहेज़ करें। हम अपने गठबंधन को कमजोर करने या समपूरक लैंगिक न्याय पद्धतियों को एक दूसरे के सामने प्रतिस्पर्धा करने के प्रयासों को अस्वीकार करते हैं। हम विविध संगठनों के प्रतिनिधि हैं और हम अनेक समपूरक पद्धतियों का अनुसरण करते हैं। हम एक दूसरे के साथ एकजुट होकर खड़े हैं और लैंगिक न्याय के व्यापक काम के साझे अवलोकन को सशक्त बनाने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं। हम सभी दाता संगठनों और नीति निर्माताओं से अनुरोध करते हैं कि वे लैंगिक न्याय के काम के लिए उपलब्ध संसाधनों में प्रभावशाली बढ़ोत्तरी करे तथा सभी विकास कार्यक्रमों में कारगर लैंगिक न्याय कार्यनीतियां शामिल करें।



9 लैंगिक न्याय के काम में पुरुषों व लड़कों की शिरकत बढ़ाने के लिए विशिष्ट नीतिगत व कार्यवाही क्षेत्रों में प्रमुख रूप से शामिल पक्ष हैं— लिंग आधारित हिंसा; महिलाओं के खिलाफ हिंसा; लड़कियों के विरुद्ध हिंसा; लड़के व विपरीत लिंगी बच्चे; पुरुषों व लड़कों के बीच हिंसा; सशस्त्र संघर्ष के दौरान हिंसा; मानवाधिकार रक्षकों के खिलाफ हिंसा; देखभाल और पितृत्व; लिंग और सार्वभौमिक राजनैतिक अर्थव्यवस्था; यौन व प्रजनन स्वास्थ्य अधिकार; यौन व लैंगिक विविधता व यौन अधिकार (एलजीबीटीआईक्यू) लड़कों व पुरुषों की लैंगिक कमजोरियां व स्वास्थ्य संबंधी जरूरतें; यौन शोषण; एचआईवी व एड्स; युवा व किशोर; शिक्षा खंड; धार्मिक व अन्य नेताओं के साथ काम; पर्यावरण व सतृता; तथा साक्ष्य आधार की सशक्तता।

10 2015 के बाद के विकास कार्यसूची में मानव अधिकार पद्धति अपनानी चाहिए और साथ ही असमान सत्ता संबंधों में भी बदलाव किया जाना चाहिए। हमारा विश्वास है कि लैंगिक न्याय हासिल करने के लिए लड़कों व पुरुषों को, महिलाओं व लड़कियों, खुद लड़कों व पुरुषों, सभी यौन झुकाव और लैंगिक पहचानों वाले व्यक्तियों के फ़ायदे के लिए शामिल किया जाना चाहिए। एक न्यायसंगत, सुरक्षित और सतत विश्व के निर्माण के लिए। हम सभी कार्यकर्ताओं, नागरिक समाज संगठनों, निजी खंड सहभागियों, सरकारों व संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों से इन नियमों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करने की गुजारिश करते हैं और यह भी अपील करते हैं कि सभी यह सुनिश्चित करें कि नई अंतर्राष्ट्रीय विकास कार्यसूची न्यायसंगत और समावेशी बने।



व किशोरों को इस काम में शामिल करने पर ही हम उन्हें लिंग संवेदनशील, न्यायसंगत एवं परवाह करने वाले व्यस्क बनने के लिए तैयार कर सकते हैं।

लैंगिक न्याय संबंधी विशिष्ट नीति क्षेत्र व कार्यवाहियां जिनमें लड़कों व पुरुषों को जोड़ा जा सकता है के उदाहरणों में निम्न शामिल हैं:-

- » बच्चों व युवाओं को हिंसा का चक्र तोड़ने के लिए लिंग परिवर्तनशील व्यवहार विकसित व प्रोत्साहित करने के लिए सशक्त बनाना और उन्हें बतौर बदलाव प्रतिनिधि संघटित करना।
- » स्कूली पाठ्यक्रम में समग्र रूप से यौन शिक्षा व लिंग आधारित हिंसा के बचाव की प्राथमिक जानकारी जिसमें मानवाधिकार, लैंगिक समानता, यौन व प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकार भी शामिल हों का विशद विकास।
- » लैंगिक पूर्वाग्रह को चुनौती देने वाले तथा आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने वाले पाठ्यक्रम का विकास।
- » शिक्षकों व प्रशासकों का लिंग संवेदनशील सीखने का माहौल बनाने के लिए प्रशिक्षण।
- » सामाजिक पारिस्थितिक शास्त्र व जीवनचक्र कार्यनीतियों का बच्चों के साथ बचपन से युवावस्था तक उपयोग जिससे वे लिंग संवेदनशील, समान व परवाह करने वाले व्यस्क बन सकें।

धृ ग टज्ञधज्ञश्रुत थळ रज्ञ रै व्ळट है। लडवज्ञै। ट फ्फरुशज्ञै। वभ भज्ञाग्भछज्ञश्रभः

अधिकतर लिंग आधारित हिंसा को बरकरार रखने में सबसे अहम भूमिका पुरुषों व लड़कों की होती है फिर चाहे इससे उनको खुद कितना नुकसान क्यों न पहुंचे। कठोर लैंगिक मानक लड़कों व पुरुषों को संघर्षों का जवाब हिंसा से देने व अपने साथियों पर नियंत्रण करने के लिए तैयार करते हैं। एक ही समय पर पुरुष व लड़के हिंसा के अपराधी व भुक्तभोगी दोनों होते हैं। पुरुषों द्वारा लिंग आधारित हिंसा को कायम रखने के पीछे एक अहम कारण है अपने बढ़ते हुए सालों में निरन्तर हिंसा होते देखना या उसका अनुभव करना। लिंग आधारित हिंसा के सामाजिक मानक को बदलने के लिए पुरुषों व लड़कों के साथ काम करना ज़रूरी है जिससे उनके द्वारा देखी या अनुभव की गई हिंसा के प्रभाव कम किए जा सकें और जिसमें लैंगिक असमानता के बुनियादी कारणों, असमान सत्ता संबंधों, महिलाओं व लड़कियों के साथ होने वाले भेदभाव को कायम रखने वाले पूर्वाग्रह व रिवाज, यौन अल्प-संख्यक व विपरीत लिंगी व्यक्तियों तथा लड़कों के लिए वैकल्पिक 'रोल मॉडल' को प्रोत्साहित करने जैसे विषयों पर समझ बनाना व उन्हें संबोधित करना भी शामिल हैं।

लैंगिक न्याय संबंधी विशिष्ट नीति क्षेत्र व कार्यवाहियां जिनमें लड़कों पुरुषों को जोड़ा जा सकता है के उदाहरण में निम्न शामिल हैं:-

- » पुरुषों व लड़कों को अपने निजी जीवन में अधिक न्यायसंगत बनने तथा हिंसा के हर रूप जिसमें घरेलू हिंसा तथा नुकसानदायक रिवाज जैसे बाल विवाह, जबरन विवाह, लिंग आधारित गर्भ परीक्षण व स्त्री जननांग विकृति शामिल हैं, को अस्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- » पुरुषों व लड़कों को अधिक व्यापक व संरचनात्मक असमानताओं पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करना।



- » पुरुषों व लड़कों की ओर लक्षित लिंग आधारित हिंसा से प्राथमिक बचाव संबंधी नीतियों को प्रोत्साहित करना।
- » महिलाओं व लड़कियों के लिए सार्वजनिक जगहों को हिंसामुक्त बनाने में पुरुषों व लड़कों को जोड़ने वाली नीतियों का विकास।
- » हिंसा करने वाले पुरुषों के लिए न्याय खंड व पीड़ितों की पैरवी से जुड़े समग्र कार्यक्रम बनाना; बंदूक नियंत्रण कार्यक्रम का कार्यान्वयन; तथा हिंसा के 'सर्वाइवर्स' और साक्षी व्यक्तियों के लिए कानूनी, वित्तीय, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक सहयोग मुहैया कराना।

टैक्स्व छैख्झाझ्जल वै व्झाझ्जै। मै। स्म्झन् भ्झाझ्गभ्छ्झाश्रभ् थ्म्झाझ्जै वै थ्ल् फ्फरुश्झाझ्जै। व्झै व्झैश्र थ्प्झ् ट छैख्झाझ्जलत्क्त्झ् (वैयश्रथ्थ्) छ्झाझ्थल् व्श्रन्झ्:

यह प्रमाणित है कि जब पिता प्रारम्भिक अवस्था से जिसमें जचगी-पूर्व अवधि भी शामिल है, बच्चों की देखभाल से जुड़ते हैं तो इस बात की संभावनाएं बढ़ जाती हैं कि वे आजीवन अपने बच्चों के साथ जुड़ाव बनाए रखेंगे। चूंकि अक्सर देखा गया है कि पुरुषों व लड़कों की तुलना में महिलाएं लड़कियां दस गुना अधिक देखभाल का काम करती हैं लिहाजा देख-रेख के काम में पुरुषों व लड़कों की तथा महिलाओं की समान वेतन के साथ वेतनयुक्त कामों में बराबर से भागीदारी को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। ऐसा तभी संभव हो सकता है जब देखभाल के कामों में दोनों की साझी भागीदारी हो।

लैंगिक न्याय संबंधी विशिष्ट नीति क्षेत्र व कार्यवाहियां जिनमें लड़कों व पुरुषों को जोड़ा जा सकता है के उदाहरणों में निम्न शामिल हैं:-

- » सार्वजनिक सेवाओं, आधारभूत सुविधाओं व सामाजिक सुरक्षा नीतियों की उपलब्धि तथा घर व परिवारों में साझी ज़िम्मेदारी का प्रोत्साहन।
- » अवैतनिक देखभाल के काम में कमी व उसका पुनः बंटवारा जिससे महिलाएं अन्य कामों जैसे अपनी खुद की देखभाल, शिक्षा, राजनैतिक भागीदारी व वेतनयुक्त काम कर सकें; तथा देखभाल के कामों की ज़िम्मेदारी को गरीब घरों से लेकर राज्य के हाथों में वित्तीय, नियंत्रण और देखरेख सुविधाओं के माध्यम से पुनर्वितरित करना।
- » पुरुषों व महिलाओं के बीच देखभाल संबंधी कामों का समान बंटवारा करना जिससे महिलाओं व लड़कियों के हिस्से में आने वाले देखभाल के काम के बेमेल बंटवारे को बरकरार रखने वाले रवैयों को बदला जा सके।
- » प्रगतिशील पितृत्व-अवकाश नीतियों को बढ़ावा दिया जा सकता है।
- » सार्वजनिक तौर पर पिता बनने से जुड़ी तैयारी वाले कोर्स और अभियानों को बढ़ावा देना जिनमें बच्चों के जीवन में पिता की भूमिका की अहमियत तथा पुरुषों के मन में देखभाल से जुड़ी भावनाएं जैसे तैयारी में कमी को दूर करने तथा अधिक भागीदारी से पहुंचने वाले फायदों को पहचानने में मदद मिलेगी।



यज्ञैः च ज्ञानं स्वस्थाय च तद्धृदयज्ञात्प्रज्ञैः । वै । ब्रह्मज्ञानं त्वाज्ञैः स्वज्ञात्प्रज्ञात्स्व
वर्त्ता, उभयज्ञात्प्रज्ञा त्ज्ञात्प्रज्ञात्स्वयज्ञैः भ्मज्ञात्प्रज्ञात्स्व वै रूपं । पुरुषज्ञात्प्रज्ञात् । वज्ञा
ज्ज्ज्ञात्प्रज्ञात् :

दुनिया भर में यौन व प्रजनन स्वास्थ्य अधिकारों की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं की समझी जाती है जबकि पुरुष यौन व प्रजनन स्वास्थ्य अधिकारों से जुड़ी अपनी, अपने साथियों व परिवारों की जरूरतों व जिम्मेदारियों की उपेक्षा करते रहते हैं। पुरुषों द्वारा यौन व प्रजनन अधिकार सेवाओं का कम उपयोग जैसे एचआईवी परीक्षण और इलाज के कारणों में सख्त लैंगिक मानक तथा संरचनात्मक रुकावटें जैसे पुरुष विशिष्ट स्वास्थ्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए अच्छी सुविधाओं वाले जांच केन्द्रों की कमी प्रमुख हैं। नतीजतन, महिलाओं व लड़कियों को न सिर्फ अपना और अपने परिवारों का बोझ उठाना पड़ता है बल्कि पुरुषों की भागीदारी में कमी की वजह से स्वास्थ्य व्यवस्था पर अनावश्यक और भारी बोझ भी पड़ता है। यौन व प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकारों पर पुरुषों के साथ हस्तक्षेप करने से पुरुषों द्वारा सेवाओं के उपयोग में प्रभावशाली बढ़त होने पर उनमें अपने साथियों के यौन व प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकारों के प्रति सहयोग व सम्मान देखने को मिलता है जिससे महिलाओं, बच्चों व खुद पुरुषों के स्वास्थ्य बेहतर बनते हैं।

लैंगिक न्याय संबंधी विशिष्ट नीति क्षेत्रों व कार्यवाहियां जिनमें लड़कों व पुरुषों को जोड़ा जा सकता है, के उदाहरणों में निम्न शामिल हैं:—

- » महिलाओं के यौन व प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं व अधिकारों तक पहुंच को बढ़ाना।
- » यौन व प्रजनन स्वास्थ्य परिणामों को आकार देने वाले सख्त मानकों में बदलाव लाने के लिए पुरुषों व लड़कों को साथ जोड़ना और उन्हें उनकी अपनी यौन व प्रजनन स्वास्थ्य जरूरतों को संबोधित करने के लिए आवश्यक सेवाएं व जानकारी हासिल करने के लिए सक्षम बनाना।
- » लैंगिक मानकों, स्वास्थ्य संबंधों व सत्ता असमानताओं का आलोचनात्मक चिंतन प्रोत्साहित करने वाली व्यापक यौन शिक्षा उपलब्ध करना।
- » यौन व प्रजनन व्यवहारों व अधिकारों में पुरुषों व लड़कों की साझी जिम्मेदारियों को बढ़ावा देना।
- » यौन संक्रमण से बचाव के लिए और/अथवा पुरुष गर्भ निरोधक तरीकों की उपलब्धि व उपयोग का विस्तार करना।
- » प्रसव पूर्व व बाल स्वास्थ्य सेवाओं में पुरुषों की जिम्मेदारी स्थापित करने के लिए जगहें बनाना तथा उनका उपयोग करना।



MenEngage

Working with boys and men for gender equality

www.menengagedilli2014.net and www.menengage.org